# प्रमुख अंश

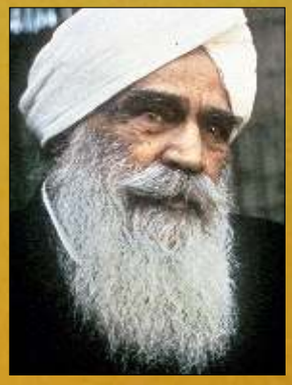



- पूर्ण समर्थ होते हुए वह विनम्र से विनम्र होकर काम करता है। उसमें शक्ति के साथ दीनता, बुद्धि के साथ प्रेम और महानता के साथ विनम्रता का अद्‌भुत मेल दिखाई देता है।
- जिन्हें परमात्मा चाहता है, वे स्वयं ही सत्गुरु के पास खिंचे चले जाते हैं या सत्गुरु स्वयं ही, चाहे वह कहीं भी क्यों न हों, उन्हें ढूँढ निकालता है।
- वह शरीर रखता है पर खुद शरीर नहीं होता बल्कि उस में काम करने वाली प्रभु – सत्ता होता है।
- चाहे कितनी भी खतरनाक परिस्थितियाँ क्यों न हों, सत्गुरु अपने शिष्यों को हमेशा उनसे बचाता है। सत्गुरु की रक्षक भुजाएँ ढाल बन जाती हैं और शिष्य ऐसी ज़िंदगी बिताता है मानो आनंद ही आनंद हो।
- जब शिष्य के विरोध में शक्तिशाली ताकतें इकट्‌ठी हो जाती हैं, वह उनमें घिर जाता है और सहायता की सभी आशायें समाप्त हो जाती हैं तब भी सत्गुरु उसकी सहायता को आता है।
- सत्गुरु की संभाल शिष्य की जिस्मानी मौत के समय और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। जब उसके सभी रिश्तेदार और मित्र असहाय होकर उसके बिस्तर के पास इंतज़ार कर रहे होते हैं और डॉक्टर नाउम्मीदी जाहिर कर देते हैं, तब सत्गुरु का दिव्य स्वरूप उसकी संभाल के लिए प्रकट हो जाता है और इस दुनिया से विदा होती आत्मा को अगली दुनिया में ले चलता है।
- पृथ्वी पर ऐसी कोई शक्ति नहीं जो संत – सत्गुरु द्वारा बीजे नाम के बीज को निष्फल कर सके। सत्गुरु कभी नहीं मरता। वह अन्य लोगों की तरह शरीर तो छोड़ सकता है लेकिन वह इस शरीर के अतिरिक्त कुछ और भी होता है। वह आदर्श होता है, एक जीवित नाद – ध्वनि होता है या जीवन तत्त्व होता है जिससे सारे संसार को जीवन और प्रकाश मिलता है।

कृपाल रूहानी सत्संग सभा(भबात)
1206, सैक्टर 48 बी, चण्डीगढ़

प्रभु: मानव तन में
कृपाल सिंह

# प्रभु
# मानव तन में

## कृपाल सिंह